सत्यावलोकन

शास्त्र धर्म प्रचार सभा
९१, चौरंगी रोड, कलकाता-२०
शाखाः १०९, अलोपीबाग, इलाहाबाद-६
दूरभाष : ८९०२४ ९५४४५
(89024 95445)

प्रकाशक–
शास्त्र धर्म प्रचार सभा

प्राप्ति स्थान–
शास्त्र धर्म प्रचार सभा
९१, चौरंगी रोड, कोलकाता–२०

E-mail : sdps_us@yahoo.com
Website : sdps.net.in

स्नानयात्रा, २०१७

ग्रन्थ मूल्य – ५ रु०

।। भूमिका ।।

यह पुस्तिका शास्त्र धर्म प्रचार सभी की अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका 'ट्रुथ' (सत्य) के ८५वें वर्ष (२०१७-१८) समारोह के अवसर पर प्रकाशित प्रस्तावना का हिन्दी अनुवाद सनातन संस्था गोआ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय षष्ठ हिन्दु अधिवेशन के पावन पर्व पर 'सत्यावलोकन' के नाम से उपस्थापित हुई।

शास्त्र धर्म प्रचार सभा
९१, चौरंगी रोड, कलकत्ता-२०

विषय सूची

पृष्ठ

भूमिका

१) ट्रुथ की गाथा २-४

२) एक संत के समान लक्ष्य एवं सलाह ५

३) हिन्दू संस्कृति एवं मूलभूत संस्कार ५-७

४) कांची पीठ के शंकराचार्य का केस से मुक्त होना ८

५) जे. एन. यू., राष्ट्रीयतावादी तर्क एवं संवाद माध्यम ९

६) संस्कृतः पश्चिमी व्यवस्था के स्थान पर पारंपरिक व्यवस्था... १०

७) शनि सिंगनापुर मंदिर में सदाचार का उल्लंघन ११

८) केरल स्थित शबरीमाला मंदिर १२-१४

९) लोभ, मानव तस्करी एवं दुःखों के आँसु १५-१७

१०) युवावस्था में आत्महत्या में वृद्धि १८-१९

११) बांग्लादेश में हिन्दुओं का दुःख २०-२२

१२) समान सिविल कोड २३

१३) संविधान हमारा वास्तविक पवित्र पुस्तक है २४-२५

१४) भारत, विश्व का सबसे बड़ा अर्थ शास्त्र तंत्र २६-२८

१५) पानी की कमी, कारण एवं निवारण २९

१६) काल, कर्म एवं जन्मगत असाधारण मेधा का उदाहरण ३०-३२

सत्यावलोकन

निवृत्ततर्षैरूपगीयमानाद्भवौषधाच्छोत्रमनोऽभिरामात्।।
क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान्विरज्येत बिना पशुघ्नात्।।

(भागवत-१०।१।४)

जो व्यक्ति मोक्ष की कामना करता है वह उत्तम श्लोक परमात्मा की स्तुति करता है। यही मोक्ष का एवं भव बाधा एवं कष्ट से मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। ईश्वर का गीत मस्तिष्क को प्रफुल्लता प्रदानकारी होता है। एक पशुघाती के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति स्वयं को ईश्वर की असीम अनुकंपा के गीत गाने से नहीं रोक सकता है।

उपरोक्त श्लोक ईश्वर की वंदना के आनंदकारी एवं निरोगकारी प्रभाव की ओर संकेत करता है। इसका अंतर्निहित अर्थ इस प्रकार स्पष्ट होता है- तृष्णा भूख से अधिक पीड़ादायक है। (यहाँ तक कि एक इंजन को चलाने के लिए भी तेल आवश्यक है।) यह श्लोक आत्मा की तृष्णा अर्थात भवतृष्णा पर प्रकाश डालता है। ज्यों ज्यों विषय आसक्ति कम होती है, आध्यात्मिक तृष्णा की बृद्धि होती है।

उपगीयमान- कोई भी व्यक्ति ईश्वर के गुणों का वर्णन नहीं कर सकता है क्योंकि उनके गुण अनंत हैं एवं प्रत्येक गुण की गहराई इतनी अधिक है कि इसका लाखवाँ भाग भी वर्णित करना संभव नही है। इसलिए उपगीयमान शब्द यह संदेश देता है कि तुम अपनी समर्थता की सीमा तक प्रभु के यशगान का प्रयास करो।

उत्तमश्लोक- उत्तम का अर्थ है उद्गतं तमः यस्मात्- जहाँ अज्ञानता एवं अंधकार पूर्ण रूप से मिट जाता है। अच्छाई वह है जो कल्याण के पथ पर ले जाए एवं अगले जन्म में परमसुख प्रदान करे। यही हमारा एकमात्र लक्ष्य है। भौतिक सुखों की जितनी भी प्राप्ति हो परंतु मृत्यु के बाद का जीवन सुरक्षित होना चाहिए।

अनुवादः साधु महात्माओं के द्वारा निर्देशित पथ का ही अनुसरण करो। यह एक अनुमोदित एवं स्वीकृत पथ है।

हमारे प्रतिष्ठाता श्रीमत् उपेन्द्रमोहन ने लिखा है-

ईश्वर की ध्वजा ऊँचा फहराओ,
उनकी कृपा का वर्णन आकाश तक पहुँचाओ।
विषय की दुनियादारी से उभरकर
सत्य के मार्ग पर अमल करो॥

ईश्वर की ध्वजा को ऊँचा रखो उनकी कृपा का वर्णन आकाश की ऊँचाईयों तक पहुँचा दो। दुनिया की वस्तुओं के विषय में आकांक्षी बनने के बजाय सत्य के पथ पर चलते हुये मनुष्य जीवन को सार्थक बनाओ-

(१) ट्रुथ की गाथाः सन् १९१० ई० में श्रीमत् उपेन्द्रमोहन के (जो उस समय मुंगेर में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे), **दो वर्षों के अश्रुपूर्ण प्रार्थना एवं एकाग्र साधना के** पश्चात् एक **मध्यरात्रि में श्रीमन्नारायण** अपनी असीम करुणा पूर्वक उनके कमरे में प्रकट हुए एवं उन्हें अपने रथ में बैंकुंठधाम जाने का प्रस्ताव दिया। श्रीमत् उपेन्द्रमोहन के भावों की गहराई, गहन भक्ति एवं उत्कृष्ट समर्पण का इस अपूर्व घटना के माध्यम

से अनुमान लगाया जा सकता है। श्रीमत् उपेन्द्रमोहन ने जो सदा ईश्वर की इच्छा को जानने की आतुरता से प्रतीक्षा करते थे, अत्यंत विनम्रता पूर्वक प्रभु को कहा कि वे पूरी दुनिया को उनकी असीम कृ ्पा के विषय में बिना बताए किस प्रकार जा सकते हैं। श्रीमन्नारायण ने पुनः कहा यदि तुम इस समय मेरे साथ नहीं जाओगे तो तुमपर दुःखों एवं संकटों का पहाड़ टूट पड़ेगा। परंतु श्रीमत् उपेन्द्रमोहन ने पुनः पूर्ण विनम्रता से **दुनिया को, प्रभु के जीव के प्रति सीमाहीन अनुकंपा एवं असीम कृपा के विषय में बताने की बात को दुहराया।** श्रीमन्नारायण अपने दिव्य रथ के साथ, जिसे उन्होंने श्रीमत् उपेन्द्रमोहन को ले जाने के लिए लाया था, खिन्न होकर लौट गए। यद्दपि श्रीमत् उपेन्द्रमोहन सभी विषयों में श्रेष्ठ थे परंतु फिर भी उनपर आकाश टूट पड़ा।

श्री हरि की चेतावनी के अनुरूप जीवोद्धार की परिकल्पना को पूर्ण करने के मिशन में अविचल रहने के कारण उन्हें अनेक गंभीर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, जो भक्त उनके निकट रहते थे वे उनकी दिव्य एवं वर्णनातीत लीलाओं के साक्षी थे। अपने जीवोद्धार परिकल्पना की पूर्त्ति के लिये एवं भक्तों के दुर्भाग्य एवं दुःखों को मिटाने के लिए उन्होंने अत्यंत वेदना एवं पीड़ा को स्वयं ग्रहण किया ताकि भक्तों को जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण एवं लक्ष्य की प्राप्ति हो। उन्होंने पशुओं को भी अपनी करुणा से वंचित नहीं किया, एवं भारतभूमि पर छाए पाप एवं असत्य के विरुद्ध अपने नियत युद्ध के फलस्वरूप उन्हे गंभीर कष्ट उठाना पड़ा। अपने प्रभु नारायण के दुःख के कारण उन्होंने अत्यंत दुःख एवं अविरल वेदना सहा। सती, संत, धर्मशास्त्र एवं सत्य के सम्मान को बचाने के लिए उन्होंने पृथ्वी पर धर्म की रक्षा का दायित्व

संभाला। उन्हें महान संतों, यथा- जगद्गुरू शंकराचार्य (विशेषरूप से कांचींमकोठी पीठाधीश श्री चंद्रशेखर सरस्वती जी महाराज), अयोध्या के श्री बलराम स्वामी जी, वृंदावन के रंगनाथ मंदिर के श्री सुदर्शन शास्त्री जी, झूँसी के श्री महावीर दास जी का सतत आशीर्वाद एवं समर्थन प्राप्त हुआ था एवं उन्होंने असंख्य विद्वानों, पंडितों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों एवं समाज के उच्चवर्गीय लोगों के जीवन को परिवर्तित कर उन्हें श्रीहरि की शरणागति एवं कैंकर्य के पथ पर लाकर उन्हें प्रसिद्ध भक्त बनाया एवं जो श्रीहरि के एकनिष्ठ सेवक बने। वे एवं उनकी धर्मपत्नी (हमारी दिव्या माँ) सत्य धर्म की रक्षा के लिए समर्पित थे एवं इसमें किसी भी चूक से वे स्वयं कठोर दंड ग्रहण करते थे। उनकी दिव्य लीलाएँ सतत जारी रही।

सन् १९२६ ई० में प्रभु नारायण पुनः उनके समक्ष उपस्थित हुए उनके मुखमंडल पर वेदना थी एवं संपूर्ण दिव्य शरीर पर आघात के चिह्न थे। श्रीमन्नारायण ने कहा सभी मेरे विषय में अपशब्द कहते हैं एवं मेरा विरोध करते हैं। क्या तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते हो? श्रीमत् उपेन्द्रमोहन प्रभु की पीड़ा को देख अत्यंत विचलित हो गए एवं पाप, असत्य, अन्याय, कृतघ्नता व्याभिचार, दुर्व्यसन एवं जो भी शास्त्र विरोधी कार्य थे उसके विरुद्ध अनवरत एवं समझौतारहित युद्ध का निर्णय लिया। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की एवं १९३३ ई० के बंगला नववर्ष पर साप्ताहिक पत्रिका ट्रूथ प्रारंभ किया।

प्रथम वैशाख १४२४ (बंगाब्द) अर्थात् १५ अप्रैल २०१७ ई० में ट्रूथ ने ८५वें वर्ष में प्रवेश किया जिसका उद्देश्य प्रभु श्री नारायण की इच्छा की पूर्ति एवं हमारे प्रतिष्ठाता के सत्य को प्रतिष्ठा करने एवं विश्व मानवता

के वास्तविक कल्याण के संकल्प की पूर्त्ति हेतु की गई थी। पिछले वर्ष की घटनावलियाँ संक्षेप में इसप्रकार थी–

(२) एक संत के समान लक्ष्य एवं सलाह- भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ० ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने न्यू इंडिया २०२० के साईट पर **आप बढो देश को बढाओ** पोस्ट किया ताकि इस बात का उल्लेख किया जा सके किस प्रकार वे २८ अगस्त २००६ ई० को लीड इंडिया २०२० मूवमेंट के कुछ जनजातीय विद्यार्थियों से मिले। उन्होंने उन सभी से एक ही प्रश्न किया- तुमलोग क्या बनना जाहते हो? अनेक उत्तरों में से एक दृष्टिहीन बालक श्री कांत बोल्ला ने, जिसका जन्म आंध्रप्रदेश के सीतारामपुरम में हुआ था एवं कक्षा ९ का विद्यार्थी था, वे कहा कि वह भारत का प्रथम दृष्टिहीन राष्ट्रपति बनेगा. राष्ट्रपति कलाम उसके लक्ष्य एवं आकांक्षा (ambition) से काफी प्रसन्न हुए एवं उसे बधाई देते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए कार्य करने को कहा। उन्होंने कहा था कि **छोटा लक्ष्य एक अपराध है**। वर्त्तमान में श्रीकांत हैदराबाद स्थित ५० करोड़ रूपए की कंपनी बोलंट इंडस्ट्रीज का २३ वर्षीय दृष्टिहीन सी. ई. ओ. है जो पर्यावरण बांधव डिसपोजेबल पैकिंग की वस्तुओं का निर्माण करने हेतु १५० दृष्टिहीन व्यक्तियों को नियुक्त किया है एवं इस कंपनी के पाँच पैकेजिंग इकाईयाँ हैं. इसका वार्षिक व्यवसाय रू. ७० करोड़ को पार कर चुका है।

पिछले वर्ष नवंबर में मुंबई में हुए आई. एन. एस. वार्त्तालाप के मंच पर प्रथम बार श्रीकांत ने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि विकलांगों का अकेलापन जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है। अनुकंपा के माध्यम से किसी व्यक्ति को जीवन में उन्नत्ति का अवसर मिलता है

जिससे उसे धन की प्राप्ति होती है। परंतु मनुष्य पैसे से धनवान नहीं बनता है बल्कि प्रसन्नता से इसकी प्राप्ति होती है। (ट्रूथ खंड ८४, सं. १०)।

भारतीय वायुसेना की परीक्षा में असफल होने के बाद श्री कलाम देहरादून स्थित स्वामी शिवानंद के आश्रम में उनसे मिले थे एवं उनकी उक्ति को उद्धृत करते हुए अपनी जीवनी में लिखा है- **इच्छाएँ जब हृदय एवं आत्मा से उत्पन्न होती हैं एवं जब यह पूर्णतः पवित्र एवं गहरी होती है तो इसमें विद्युतचुंबकीय ऊर्जा की उत्पत्ति होती है। अतः अपने भाग्य को स्वीकार करो एवं जीवन में आगे बढ़ो। तुम वायुसेना में विमानचालक बनने के भाग्य के साथ नहीं उत्पन्न हुए हो। तुम्हारे भाग्य में क्या है यह तो अभी ज्ञात नहीं है परंतु वह पूर्वनिर्धारित है। इस असफलता को भूल जाओ क्योंकि यह तुम्हें अपने भाग्य निर्धारित पथ पर बढ़ने के लिए आवश्यक था. तुम अपने अस्तित्व के उद्देश्य की खोज करो। मेरे पुत्र- अपने साथ एकात्म बनो। ईश्वर की ईच्छा के समक्ष स्वयं को समर्पित करो। वे आगे चलकर भारत के ११वें राष्ट्रपति बने। यह सत्य है कि श्रीहरि की इच्छा श्री हरि से भी बड़ी है। यही शास्त्र का मूल संदेश है।**

(३) हिन्दू संस्कृति एवं मूलभूत संस्कार (Ingrained Ethos):

(i) कोलकाता में सुनीत राय नामक टैक्सी ड्राईवर, जो पप्पु भाई के नाम से प्रसिद्ध है, ने तीन सप्ताह पूर्व एक वृद्ध को ए. जे. सी. बोस रोड एवं कैमेक स्ट्रीट क्रासिंग पर एक बस से गिरते हुए देखा। उसने तत्काल उसे अपनी टैक्सी से एस. एस. के. एम. अस्पताल पहुँचाया। वृद्ध के शरीर से खून बह रहा था परंतु वह होश में था।

स्वस्थ होने के बाद उस व्यक्ति ने ड्राईवर को बुलाया. शुक्रवार के दिन फोर्टिस अस्पताल के द्वारा उस ड्राईवर को सम्मानित किया गया। उस ड्राईवर ने पिछले तीन वर्षों में लगभग ६० दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों की सहायता की थी। विशेषतः अपने पिता के २०१३ ई० में दुर्घटना से हुई मृत्यु के बाद वह किसी भी दुर्घटनाग्रस्त को छोड़कर नहीं जा सका। पुलिस के द्वारा कभी कभी की गई पूछताछ से भी वह विचलित नहीं हुआ एवं उसने कहा मेरी दृष्टि में आनेवाले प्रत्येक दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की मैं सहायता करूँगा।

(ii) स्कूल में पढ़ने वाली एक लड़की के नवजात शिशु का दायित्व जब उसके पार्टनर ने लेने से असहमति जताई तो वहाँ से गुजरने वाले लादेन अंसारी नामक दूसरे इलाके के ५५ वर्षीय बुजुर्ग व्यक्ति ने आगे बढ़कर उस लड़की एवं उसके नवजात शिशु का दायित्व लिया एवं उन्हें अपने घर ले गया। इस बात की जानकारी पुलिस एवं प्रशासन को दी गई. लादेन ने कहा **हमारे प्रधानमंत्री ने बेटी बचाओ अभियान प्रारंभ किया है** एवं मैं इससे प्रेरित हुआ हूँ। मेरी चार बेटियाँ हैं एवं यह लड़की एवं उसका नवजात शिशु भी अब मेरे परिवार का सदस्य बन चुके हैं।

(iii) शेख रमीज ने अपना पर्स कार्यालय के ड्रावर में छोड़ दिया था। ऑटो में मस्जिद जाते हुए उसे पता चला कि पर्स नहीं मिल रहा है। वह अपनी जेबों में चिन्तित होकर ऑटो के किराए का पैसा ढूँढ़ रहा था परंतु उसे नहीं मिला। उसने ड्राईवर को देखा- उसके ललाट पर लंबा सा लाल तिलक लगा था एवं बाँह पर गणपति उत्सव का टैटू था। उस ड्राईवर को कुछ अंदेशा हुआ एवं उसने पूछा- क्या हुआ साहब.

रमीज ने कहा उसके पास किराए के पैसे नहीं हैं एवं उसने वादा किया कि नमाज के बाद मस्जिद से घर लौटकर वह पैसे चुका देगा।

एक चौड़ी सी मुस्कान के साथ ऑटो ड्राईवर ने कहा आप तो मालिक के पास जा रहे हैं आप चिंता न करें मैं आपको वहाँ छोड़ दूँगा परंतु मैं वहाँ प्रतीक्षा नहीं कर सकूँगा। अगली सुबह रमीज ने उस ड्राईवर को खोज निकाला और उससे कहा कि मैं पूरी जिंदगी तुम्हारी सहायता को नहीं भूल सकूँगा। उसके बाद रमीज ने अपना कर्ज चुकाया एवं एक हाथ में गणपति उत्सव का निमंत्रण पत्र एवं दिमाग में खुशियाँ लेकर घर की ओर लौट गया। ऐसी घटना सिर्फ भारत में ही घटती है।

उपरोक्त तीन अलग अलग व्यक्तियों द्वारा सज्जनता से किए गए कार्य, हृदय को आनंदित करते हैं एवं निश्चित रूप से यह उन दयालु ईश्वर के हृदय को भी आनंदित करते हैं जिनसे सभी पवित्रता एवं सज्जनता की उत्पत्ति हुई है।

नास्तिकता से भरे हुए उस विश्व में जब अपराध लोभ, स्वार्थ, कामुकता एवं आतंक का राज है, उस समय मात्र हिन्दू संस्कृति एवं परंपराओं ने ही त्याग एवं बलिदान की धारा को इस आधुनिक समय में भी जारी रखा है। ऊँचे ऊँचे मकान नहीं बल्कि साधु संत ही किसी सभ्यता के माप की इकाई हैं, ऐसा हमारे पूज्य प्रतिष्ठाता श्रीमत् उपेन्द्रमोहन का कथन था। (ट्रूथ खंड ८४ स. २२)

(४) कांची पीठ के शंकराचार्य का केस से मुक्त होना-

धर्म की स्थिति बनी रही एवं सत्य का विजय हुआ क्योंकि न्यायालय

ने कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामीगल को ३ सितम्बर २००४ ई० में हुए शंकररमन की हत्या के केस से मुक्त कर दिया। इस बात प्रमाणित होने में एक दशक का समय लगा कि पूरा केस ही उद्देश्य पूर्ण ढंग से गलत दिशा में चलाया गया था। (टाईम्स ऑफ इंडिया ३०.४.१६, ट्रूथ खंड ८४, सं. ७)

(५) जे. एन. यू., राष्ट्रीयतावादी तर्क एवं संवाद माध्यमः

जब जे. एन. यू. में भीड़ चिल्लाती है कि **"भारत तेरे टूकड़े होंगे इंशा अल्लाह इंशा अल्लाह"** तो संवादमाध्यम को इसमें सांप्रदायिकता नजर नहीं आती है। हम इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि क्या होता यदि भीड़ इंशा अल्लाह की जगह पर जय श्री राम के नारे लगा रही होती। संवादमाध्यम का इस प्रकार मौन रह जाना किसी बड़े षडयंत्र का संकेत है।

दिल्ली हाईकोर्ट के जज जस्टिस रानी ने जे. एन. यू. छात्र संगठन के सभापति को जमानत देते हुए कहा था कि **सभी को इस बात को याद रखना चाहिए कि ये लोग इस आजादी का आनंद इसलिए ले पा रहे हैं क्योंकि हमारी सेना एवं अर्द्धसेना के जवान सीमाओं की सुरक्षा पर लगे हैं**। हमारे सैनिक विश्व के उस उच्चतम युद्धक्षेत्र में नियुक्त हैं जहाँ ऑक्सीजन का भी घोर अभाव है। अफजल गुरू एवं मकबूल भट की तस्वीर सीने से लगाकर जो व्यक्ति देश विरोधी नारे लगा रहे हैं एवं आतंकवादियों की मौत को महिमामंडित कर रहे हैं वे उन कठिन परिस्थितियों में एक घंटा भी नहीं रही पाएँगे। (ट्रूथ खंड ८४, सं. १६)

(६) संस्कृतः पश्चिमी व्यवस्था के स्थान पर पारंपरिक व्यवस्था को महत्व देनाः

संस्कृत के अध्ययन में यह महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा जा रहा है कि ऑक्सफोर्ड एवं हारवर्ड या उसके समकक्ष किसी पश्चिमी संस्थान से अध्ययन एवं प्रशिक्षण के बाद भी संस्कृत के छात्र भारत आकर किसी गुरु के चरण में बैठकर अपनी शिक्षा पूरी कर रहे हैं। पारंपरिक रूप से किसी पंडित के माध्यम से संस्कृत के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि प्राचीन परंपराएँ वापस आ रही हैं (ट्रूथ खंड ८४, सं. ३)

हमारे प्रतिष्ठाता ने संस्कृत शिक्षा के अमूल्य महत्व पर मंतव्य करते हुए अपने विशेष शैली एवं भाषा में कहा था-

यह असंभव मात्र विज्ञान के प्रति मूर्खतापूर्ण आकर्षण के कारण ही संभव हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान, वास्तविक शिक्षा, मानवता के निर्माण, सशक्त मेरुदंड निर्माण एवं मेरूदंडहीनता जैसे महा रोग के निर्मूल करने के कार्य के लिए कितना खतरनाक है।

आत्मा के इन प्रबल रोगों का एकमात्र इलाज संस्कृत है। इसी कारण कुटिलता से भरे हुए दुष्ट काफी लंबे समय से संस्कृत भाषा की अवलुप्ति के लिए शोर मचा रहे हैं।

चीन में बौद्ध ग्रंथों के प्रथम पदार्पण के लगभग दो हजार वर्षों के बाद बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन के प्रति नए सिरे से रूचि दिखाई पड़ने लगी है। **तिब्बत के काफी पुराने भूले बिसरे ग्रंथों के हाल में हुए खोज से चीनी विद्वानों में प्राचीन भाषा के अध्ययन की एक नई लहर दौड़ गई है।**

(७) शनि सिंगनापुर मंदिर में सदाचार का उल्लंघनः

मुंबई उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देश के कारण शनि सिंगनापुर मंदिर के ट्रस्टियों ने सभी भक्तों के निर्बाध (पुरुष एवं महिला) प्रवेश की अनुमति देने का निर्णय लिया जो महाराष्ट्र के पर्व गुडी पाडवा की तिथि थी। उच्च न्यायालय ने १ अप्रैल को यह निर्णय दिया कि स्त्रियों को किसी भी उपासना स्थल में जाने का मौलिक अधिकार है एवं सरकार इसकी रक्षा के लिए उत्तरदायी है।

भूमाता ब्रिगेड की नेत्री तृप्ति देसाई ने यह आशा व्यक्त की है कि नासिक के त्रयंबकेश्वर एवं कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर के ट्रस्टी भी इसी प्रकार निर्णय लेंगे। (दि स्टेट्समैन २.४.१६ ट्रुथ खंड ८४, सं. ४)

ट्रूथ ने लिखा– जब आवेश मनुष्य को परिचालित करता है तो पक्षपात बढता है एवं पाप संचालक के रूप में कार्य करता है।

मुंबई उच्च न्यायालय के आदेश के फलस्वरूप हिन्दु जनसंख्या का एक छोटा अंश एवं तथाकथित धर्मनिरपेक्ष (हिन्दू विरोधी मीडिया) ताकतें हिन्दू मंदिरों के प्राचीन परंपराओं को तोड़कर अपने अधिकार प्रतिष्ठित होने से काफी आनंदित हैं। दूसरी ओर शंकराचार्य एवं हिन्दुओं का एक बड़ा वर्ग इस धर्मनिरपेक्ष न्यायपालिका एवं हजारों वर्षों से माने जाने वाले शास्त्रीय परंपराओं के उल्लंघन से काफी व्यथित हैं। जो लोग संख्यालघुओं से जुड़े विषयों पर अपना मत व्यक्त करने में संकोच करते हैं वे ही शास्त्रीय विधियों को असंवैधानिक कहने में एवं आधुनिकता तथा सामाजिक न्याय की आड़ में उनके उल्लंघन एवं अपमान करने में, इन धर्मनिरपेक्ष अधिकारों का उपयोग करते हैं एवं यह जानने का प्रयास बिल्कुल नहीं करते हैं कि धार्मिक अधिकार

धारकों द्वारा लागू किए गए ये विधि एवं निषेध, जो समय की कसौटी पर प्रमाणित हैं, कितने कल्याणकारी हैं।

कानूनी विशेषज्ञ संवैधानिक मुद्दों पर ही विशेष ध्यान देते हैं जबकि पवित्र ज्ञान के भंडार वेद में वर्णित स्थिर सत्य पर इनका ध्यान केंद्रित नहीं होता है। जो— दैहिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का कोष है एवं जो काल (Time) एवं अंतरिक्ष (space) की सीमाओं को भी अतिक्रमित करता है, उसे इंद्रिय निर्भर एवं त्रुटियुक्त मेधा के आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती है, जो 'Law of contradiction' के मूल सिद्धांतों की सूक्ष्मता को अर्थात् माया का प्रभाव पूरे विश्व पर है। यह समझने में असमर्थ है। **शास्त्र समदर्शन की सलाह देते हैं परंतु समव्यवहार की नहीं एवं इसके साथ ही अधिकार भेद दर्शनम् पर भी जोर देते हैं जो काल, कर्म एवं संस्कार की विभिन्नताओं पर आधारित है।**

ये सभी नास्तिकगण स्कूल, कार्यालय, न्यायालय, चिकित्सालय इत्यादि स्थानों में लागू प्रतिबंधों को हमेशा मानते हैं एवं अधिकतर पवित्र कार्य मानते हैं।

(८) केरल स्थित शबरीमाला मंदिर

पिछले सप्ताह केरल स्थित दो संस्थाओं ने यथा हिन्द नवोत्थान प्रतिष्ठान अपने सभापति स्वामी भूमानंद एवं नारायणाश्रम तपोवनम् अपने संचालक ट्रस्टी स्वामी भूमानंद के माध्यम से जस्टिस दीपक मिश्रा द्वारा सुने जा रहे पी. आई. एल. में ध्यानाकर्षण के लिए आवेदन दिया।

पी. आई. एल. की सुनवाई करते हुए ११ जनवरी को **कोर्ट ने लॉर्ड अयप्पामंदिर में रजस्वला की उम्र की महिलाओं के प्रवेश निषेध** पर प्रश्न किया।

त्रावणकोर देवास्वम बोर्ड ने, जो शबरीमाला मंदिर के प्रशासन का कार्य संभालता है, सोमवार को १०-५० आयुवर्ग की महिलाओं के प्रवेश में प्रतिबंध को न्यायोचित बताते हुए कहा कि यह एक प्राचीन परंपरा है एवं इसका अनुपालन अन्य मतावलंबियों के उपासना स्थलों पर भी होता है।

इनके वकील एवं वरिष्ठ अधिवक्ता के. के. वेणुगोपाल ने जस्टिस दीपक मिश्रा वी. गोपालागौड़ा एवं कुरीयन जोसेफ के बेंच से कहा कि यह कहना गलत होगा कि महिलाओं के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध है बल्कि यह मात्र १०-५० आयुवर्ग के लिए लागू है जो उचित है।

शास्त्रों ने रजस्वलानारी को कुछ दिनों के लिए अलग रहने का निर्देश दिया है। डी. भी. एस. रेड्डी एवं जे. सी. गुप्ता ने नवंबर १९४९ के इंडियन मेडिकल एसोशियेसन के जर्नल में लिखा है–

शास्त्रों में रजस्वला स्त्री के कुछ दिनों तक अलग रहने का विधान है। डी. भी. एस रेड्डी एवं जे. सी. गुप्ता ने नवंबर १९४९ के इंडियन मेडिकल एसोशियेसन की पत्रिका में लिखा–

एक मेडिकल स्टूडेंट द्वारा भारत के गर्म जलवायु में स्नायविक मांसपेशियों के निर्माण के क्रम में किए गए परीक्षणों से अकस्मात् जो जानकारी प्राप्त हुई उससे उस विषयमें पहले से हुई खोजों में अधिक विस्तार लाभ हुआ। स्कि (schick) ने १९२० ई० में यह देखा कि

रजस्वला होने के प्रथम दो दिनों में किसी महिला द्वारा किसी तोड़े हुए फूल को छूने पर वह १० से २० मिनट में मुर्झा जाता है। उसने ही प्रथमबार मेनोटोक्सीन निर्गत होने की खोज की, जो नैपकिन के द्रव से प्राप्त हुआ था। महिलाओं के रजस्वला होने की स्थिति में रक्त में एवं बगल के पसीने में अन्य समय की तुलना में अधिक टॉक्सीन पाई गई जो फूलों के खिलने में बाधक है एवं यीस्ट की वृद्धि में भी बाधा उत्पन्न करता है। रजस्वला स्त्री के बगल के पसीने के जंतुओं के तंतुओं पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रथमबार सिकबर्ग (Sicberg) एवं पास्के (Patschke) ने १९२३ ई० में देखा। उन्होंने इसके प्रभाव से एक मेढ़क की हृदय गति को धीमा होते हुए एवं एक खरगोश की आँत के चाप (tone) में वृद्धि होते हुए देखा. इसके बाद रजस्वला स्त्री के पसीने में पाई जाने वाली टॉक्सीन का प्रमाण १९२४ ई० में पोलैंड (Poland) एवं डायक्ल (Diecl) ने दिया। (९१, चौरंगी रोड, कोलकाता से देश के प्रख्यात चिकित्सक डॉ० नलिनीरंजन सेनगुप्ता (एम. डी.) द्वारा प्रकाशित Reason Science and Shastras से पुनः प्रस्तुत।) विद्वान अधिवक्ता द्वारा इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय में इसके आधार पर वैज्ञानिक तल्य प्रस्तुत किए गए। (ट्रूथ खंड ८४, सं. ५)।

सारे देश में जे के, बिरला एवं अन्य लोगों के द्वारा बड़े बड़े मंदिर का निर्माण किया गया है। वहाँ पर नियम आसान हैं एवं कोई भी संकीर्ण मानसिकता वाला व्यक्ति अपना प्रतिरोध दिखाने वहाँ नहीं जाएगा।

इन मुद्दों को समठाधिपति, शंकराचार्य एवं संतों से विचार विमर्श करके ही सुलझाया जाना चाहिए।

(९) लोभ, मानव तस्करी एवं दुःखों के आँसु–

हैदराबाद की एक महिला, जो सउदी अरब में काम करती थी, की मृत्यु अपने मालिक के तथाकथित अत्याचार के कारण हो गई। ऐसा उसके परिवारवालों ने कहा था। (IANS, May 9, 2016) असीमा खातून (२५), जो पिछले वर्ष दिसंबर में सऊदी अरब गई थी, की वक्षरोग के कारण रियाध के किंग सऊद अस्पताल में २ मई को मृत्यु हो गई थी परंतु उनके परिवारवालों को इसकी जानकारी तीन दिनों के बाद मिली।

इन पीड़ित तथा आश्रयहीनों को सुरक्षा, न्याय एवं मानविक व्यवहार मिलना चाहिए। मात्र प्रशासन की सामान्य सहानुभूति पर्याप्त नहीं है। **मानव तस्करी हमारे देश के सीमांतवर्त्ती जिलाओं में काफी फैला हुआ है एवं इसमे धर्म परिवर्त्तन करवाने वाले संस्थाओं की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है।** (TRUTH vol 84, सं. 7)

इस्लाम में महिलाओं की स्थिति हमेशा अस्थिर रही है। जब पत्नियों को तीन बार तलाक कहकर तलाक दिया जा सकता है तो उनकी पारिवारिक दुर्दशा का अनुमान सहजता से लगाया जा सकता है। इस्लाम में महिलाओं की समानता का अधिकार मात्र कपोल कल्पना है। एक महिला पुरुष के लिए संपत्ति के समान है जिसप्रकार जमीन एवं गुलाम उसकी संपत्ति होती है। एक पुरुष की गवाही भी स्त्रियों के साथ हुए दुष्कर्म के प्रमाण के लिए आवश्यक है जिसके कारण शरीअत कानून में किसी महिला के साथ हुए दुष्कर्म को प्रमाणित करना अत्यंत कठिन है। यू. एस. स्टेट डिपार्टमेन्ट के एक नए रिपोर्ट के अनुसार

मध्यपूर्व (Middle East) एवं उत्तर मध्य अफ्रीका के मुस्लिम देश मानव तस्करी में अग्रणी है।

मध्य पूर्व देशों में ईरान, कुवैत, सउदी अरब एवं सीरिया जैसे देश तीसरी श्रेणी (Tier 3 Status) के हैं। यू. एस. स्टेट डिपार्टमेन्ट के अनुसार मानव तस्करी प्रतिवर्ष ३२ बिलियन डॉलर का तेजी से फलना फूलता आपराधिक व्यवसाय है।

लगभग २७ मिलियन लोग इस अपराध के शिकार है जिन्हें बलपूर्वक श्रमिक बनाया जाता है या सेक्स (यौन) श्रमिक बनाया जाता है। ECPAT-USA (एक अलाभकारी संस्था जो बच्चों के यौन संबंधी शोषण के विरुद्ध कार्य करती है) के अनुसार यौन (सेक्स) के लिए मानव तस्करी युनाइटेड स्टेट में अत्यंत उद्वेगजनक स्थिति में है जहाँ लगभग १००,००० बच्चे सेक्स (यौन) व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

मैक्सिको सिटी (सी. एन. एन) में कार्ला जैकिन्टो अपने अनुभव सुनाती है. मानव तस्करों के हाथों में पड़ने के बाद उसके साथ ४३,२०० बार शारीरिक दुष्कर्म किया गया. वह कहती है प्रतिदिन लगभग ३० व्यक्ति, सप्ताह के सातों दिन एवं लगभग ५ वर्ष की अवधि तक यह होता रहा जिसकी कुल संख्या ४३२०० है। उसकी कहानी मैक्सिको एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के कार्ला जैसी हजारों लड़कियों के मानव तस्कर के चंगुल में फंसने की दु:खद कहानी है।

मानव तस्करी एक ऐसा आकर्षक एवं लाभजनक व्यवसाय हो गया है जिसने मैक्सिको एवं अटलांटा तथा न्यूयॉर्क के बीच की सीमाओं को

भी तोड़ दिया है। रफैल रोमो, सी. एन. एन. updated 0454 GMT (1254 HKT) नवंबर ११, २०१५)।

रमनदीप कौर ने यह उल्लेख किया है कि ड्रग एवं हथियार तस्करी के बाद मानव तस्करी दुनिया का तीसरा सर्वाधिक लाभजनक संगठित अपराध है। मानव तस्करी का लगभग ८० प्रतिशत सेक्स कार्यों के लिए एवं बाकी बंधुआ मजदूरी के लिए किया जाता है। भारत एशिया के अपराधों का केंद्रविन्दु है। भारत में कर्नाटक मानव तस्करी में तीसरे स्थान पर है।

पाकिस्तान के एक मंत्री रहमान मलिक ने सोमवार को कहा कि आतंकवादी अपहृत बच्चों का उपयोग पूरे देश में आत्मघाती दस्ते के रूप में कर रहे हैं। (कुवैत न्यूज [KUNA], इस्लामाबाद टाइम १५ जून)।

भगवान श्री कृष्ण श्रीमदभागवत गीता में कहते हैं– अपने धर्म का त्याग करने की अपेक्षा मृत्यु अधिक श्रेय है। इससे स्कूल स्तर से ही धर्मशिक्षा की आवश्यकता का पता चलता है।

यदि दुनिया को हर प्रकार के संकट, छल प्रपंच से रक्षा करनी हो तो सनातन धर्म के आदर्श एवं आंतरिक सिद्धातों के माध्यम से ही यह संभव है जिससे शासक वर्ग में आतंकवाद एवं मानवता के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति उत्पन्न होगी।

सभी शास्त्रों का अनुधावन करते हुए महर्षि व्यास द्वारा रचित दो वाक्य निम्नलिखित हैं–

आलोड्य सर्वशास्त्राणि व्यासस्य वचनद्वयम्
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

दूसरों के दुःख दूर करना पुण्य है एवं दूसरों को सताना पाप है।

हिन्दू धर्मग्रंथों से स्पष्ट होता है कि नारी पर अत्याचार पाप है जिसका फल अविलंब मिलता है। श्री राम भक्त हनुमान ने माँ जानकी के दुःखो के ज्वाला के माध्यम से स्वर्ण लंका को जला डाला था– यः शोक वह्निम् जनकात्मजाया–

पुनः महाभारत में द्रौपदी के चरम अपमान किए जाने के कारण मुख्य अपराधी दुःशासन एवं दुर्योधन ही नहीं बल्कि पूरे कौरववंश का ही विनाश हो गया।

हाल ही में अयुब खान के सैनिकों के द्वारा बांग्लादेश की महिलाओं के साथ किए गए दुष्कर्म के कारण (सैनिकों के बंकरों में अत्याचारित महिलाओं के अंतर्वस्त्र प्रचूर मात्रा में पाए गए) ही उन्हें भारतीय सैनिकों से लज्जाजनक रूप से पराजित होना पड़ा एवं पाकिस्तानी सेना के ९१,००० सैनिकों को निःशर्त समर्पण करना पड़ा। यह घटना अभी भी हमारी स्मृति में ताजा है।

हम दीवाल के लेखन को पढ़ सकते हैं–

ईश्वर की चक्की में पिसाई थोड़ी धीमी होती है परंतु बहुत महीन होती है।

१०. युवावस्था में आत्महत्या में वृद्धि-

स्वयं को चोट पहुँचाने की प्रवृत्ति भारत के युवाओं की मृत्यु का प्रमुख कारण है। हाल के एक अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि भारत में प्रतिवर्ष लगभग ६०,००० मौतें (१५-२४ आयुवर्ग के लोगों की) आत्महत्या के कारण होती है। युवाओं में अपंगता का भी यही सबसे

बड़ा कारण है। (The Times of India 10.5.2016, TRUTH vol 84, No. 8).

स्वयं को चोट पहुँचाने की श्रेणी में आत्महत्या, आत्महत्या का प्रयास या स्वयं पर प्रहार करने जैसी घटनाएँ आती हैं। इसके बाद ही दूसरे स्थान पर इसी आयुवर्ग में २०१३ में ३७००० मौतें हुई।

यह अत्यंत ही चिंता का विषय है कि भारत एवं चीन दोनों देशों में पदार्थों (substance) के प्रयोग से उत्पन्न असामान्यताएँ (drug dependence disorder) काफी हद तक समान है। ड्रगों के प्रयोग से होने वाली असामान्यताएँ महिलाओं की तुलना में पुरुषों में दुगूनी होती है जबकि शराब के प्रयोग से उत्पन्न असामान्यताएँ महिलाओं की तुलना में पुरुषों में सातगुना होती है। (sushmi.day@timesgroup.com. The Times of India, May 14, 2016).

ISRO के प्रधान श्री किरण कुमार कहते हैं एसी मान्यता है कि ध्यान एवं योग के अभ्यास से मस्तिष्क की स्थिरता प्राप्त करने में सहायता मिलती है एवं जागरूकता तथा स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

उन्होंने हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के वैज्ञानिकों के एक हाल के अध्ययन को उद्धृत करते हुए कहा कि यह ज्ञात हुआ है इस शारीरिक एवं मानसिक अभ्यास से शरीर के जीनों पर प्रभाव पड़ता है जिससे तनाव का स्तर नियंत्रित होता है एवं शरीर की प्रतिरोधी क्षमता में वृद्धि होती है। शरीर में ऊर्जा की वृद्धि होती है एवं हाइपरटेनशन के तनाव में कमी आती है। इसके अतिरिक्त विदेशों में नियमित वैज्ञानिक शोधों से प्रार्थना के प्रभाव के विषय में भी अधिक जानकारी मिलती है। (TRUTH vol, 87, No. 40).

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने कहा कि योग एवं ध्यान का तीन महीने का प्रशिक्षण एवं भारत के प्राचीन कीर्त्तन के अभ्यास से स्मृति शक्ति बढ़ती है एवं अलझाईमर रोग से लड़ने की क्षमता भी बढ़ती है। UCLA के तंत्रिकातंत्र के वैज्ञानिकों के एक दल ने यह पाया कि योग एवं ध्यान से मानसिक समस्याओं में कमी आती है जो अलझाईमर एवं अन्य मानसिक व्याधियों से बचाती है। शोधों से यह ज्ञात होता है कि ये अभ्यास स्मरणशक्ति वृद्धि व्यायामों से भी अधिक प्रभावकारी हैं एवं जिन्हें दिमागी क्षति के चिकित्सा में अति उच्च कोटि का माना गया है। यह शोध Alzheimeis Research and Prevention Foundation की राशि से की गई थी एवं जिसे "Journal of Alzheimer's Disease" में प्रकाशित किया गया था। (Short cuts column, The TOI, May 19, 2016)।

(११) बांग्लादेश में हिन्दुओं का दुःख-

बांग्लादेश में आज संदिग्ध आतंकवादियों ने नित्यरंजन पांडे नामक ६० वर्षीय एक बुजुर्ग आश्रम कर्मी की हत्या कर दी। श्री पांडे पिछले ५० वर्षों से ठाकुर अनुकूल चंद्र सत्संग परमतीर्थ हेमायतपुरधाम आश्रम में एक स्वेच्छासेवक के रूप में कार्य कर रहे थे। इस घटना से बांग्लादेश में हिन्दूविद्वेष की जड़ और अधिक मजबूत हो गई। (The Telegraph, 11.6.16, Truth vol 84, No. 12).

Truth ने यह रिपोर्ट दिया था कि १९७१ ई० में हुआ बाग्लादेश स्वाधीनता आंदोलन २०वीं सदी का सबसे बड़ा हत्याकांड बन गया। एक अनुमान के अनुसार लगभग ३० लाख लोग मारे गए थे। पूर्व पाकिस्तान के हिन्दुओं ने पाकिस्तानी सेना के क्रूर अत्याचारों को

झेला। लगभग २५ लाख हिन्दू मारे गए थे एवं लगभग २ लाख हिन्दू औरतों का बलात्कार हुआ था। बंगाली हिन्दुओं के लगभग सभी व्यवसायों को स्थायी रूप से नष्ट कर दिया गया था। ऐतिहासिक रमना काली बाड़ी एवं धमराई के रथ को पाकिस्तानी सैनिकों ने नष्ट कर जला दिया था। बांग्लादेशी हिन्दुओं की इस भयंकर दशा को देखते हुए Time पत्रिका ने एक लेख में २.८.७१ को कहा था– **हिन्दू, जो शरणार्थियों की संख्या का तीन चौथाई हैं एवं मृतकों का अधिकतम भाग है, ने मुसलमान सेना की घृणा को सहा है।**

यह बताया गया था कि १९७१ ई० में पूर्व पाकिस्तान में हिन्दुओं की जनसंख्या लगभग १ करोड़ १० लाख थी जिससे यह पता चलता है कि लगभग ८० लाख अर्थात् हिन्दुओं की जनसंख्या का लगभग ७० प्रतिशत भाग गया था।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि २००१ ई० के चुनाव के बाद भी हजारों हिन्दू परिवार नई सरकार के विश्वासी आंदोलनकारियों की हिंसा से बचने के लिए पड़ोसी भारत में भाग कर गए।

२ नवंबर २००६ को USCIRF ने बांग्लादेश की यह कहकर आलोचना की कहाँ लगातार हिन्दुओ पर अत्याचार हो रहै हैं। साथ ही यह भी कहा गया कि सरकार को ढाका पर इस बात का दबाव बनाना चाहिए कि वहाँ धार्मिक स्वाधीनता की रक्षा हो; २००७ के अगले राष्ट्रीय चुनाव के पहले बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा हो।

सन् २०१३ में अंतराष्ट्रीय अपराध न्यायालय ने यह बताया कि १९७१ के बांगलादेश के मुक्तियुद्ध में कई जमात सदस्य हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध के अपराधी थे। **बांग्लादेश के जमात इस्लामी के द्वारा**

अल्पसंख्यक हिन्दुओं के विरुद्ध हिंसा को बढ़ावा दिया गया। उन्होंने सोचा कि काफिर हिन्दु अल्पसंख्यकों पर हिंसा एवं निर्दयता दिखाकर वे इस्लाम को बढ़ावा देंगे। हाल ही में भारत में मदरसा स्कूलों के प्रबंधकों द्वारा देशभक्ति नामक पुस्तक का प्रस्ताव उन्नति की ओर उठाया गया एक कदम हो सकता है। इस्लाम के असहनशील सिद्धांत की घोर निंदा करना एवं विभिन्न जिलों में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की मुस्लिम आग्रासन से रक्षा करना अत्यावश्यक है।

यह कहा जा सकता है कि इस्लामिक भाईचारा एवं इसलामिक दुनिया का सिद्धांत हिन्दु सिद्धांत सर्वधर्मसमभाव (अर्थात् सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान) के सम्पूर्ण विपरीत है। खाफी खान नाम के एक विद्वेषी इतिहासकार ने सहनशीलता के प्रसंग में मध्ययुगीय भारत के संदर्भ में लिखा है– **शिवाजी ने यह नियम बनाया था कि किसी मस्जिद, कुरान या किसी नारी को हानि नहीं पहुँचाया जाए। पवित्र कुरान को सदा सम्मानपूर्वक स्पर्श किया गया एवं उसे हमेशा किसी मुसलिम धर्म को मानने वाले के हाथों में ही सौंपा गया।**

औरंगजेब के चौथे बेटे मोहम्मद अकबर ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया एवं अपनी पुत्री को प्रसिद्ध राजपूत राजा दुर्गादास राठौड़ के हाथों में सौंपकर पारस भाग गया। दुर्गादास राठौड़ ने उस लड़की को पालकर बड़ा किया। जब उस लड़की को औरंगजेव को वापस किया गया तो उसने बताया किस प्रकार दुर्गादास ने उसके लिए अजमेर से एक शिक्षक की व्यवस्था की जिसने उसे पढ़ाया एवं जिसकी सहायते से उसने पूरा कुरान याद कर लिया। क्या विश्व

इतिहास में सहिष्णुता एवं दूसरे धर्म के प्रति सम्मान का इससे अच्छा उदाहरण हो सकता है?

मुस्लिम अच्छे हैं यदि उन्हें कठोर अनुशासन से (तानाशाही से) शासित किया जाए परंतु इतिहास में ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं है कि मुस्लिम किसी प्रजातंत्र में अल्पसंख्यक के रूप में शांतिपूर्वक रहे हो।

(१२) समान सिविल कोडः ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने शनिवार को पुनः समान सिविल कोड का विरोध जताया एवं उसके जेनरल सेक्रेटरी मौलाना वली रहमानी ने कहा यह मुस्लिमों को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं होगा। यद्दपि तीन तलाक के विरोध में आवाजें तेज हो रही हैं।

मुसलिम समुदाय के नेता इस परिस्थिति का लाभ उठाने के लिए यह भ्रम फैला रहे हैं कि समान सिविल कोड स्वाधीनता में हस्तक्षेप है एवं शरिआ के विरुद्ध है। परंतु ये मुस्लिम नेता आराम से यह भूल जाते हैं कि मिश्र, इंडोनेशिया, इराक, जॉर्डन, मलेशिया, सिरिया, ट्यूनीशिया, मोरक्को, इरान, तुर्की जैसे मुस्लिम देश एवं निकटवर्त्ती पाकिस्तान एवं बांग्लादेश जैसे मुस्लिम देशों ने भी मुस्लिम पर्सनल लॉ को नए सिरे से बदल दिया है ताकि कोई उसका दुरुपयोग नहीं कर सके। विशेष रूप से बहु बिवाह को अधिकतर देशों में निषिद्ध कर दिया गया है। क्या इन देशों के मुस्लिम, जिन्होंने जान बूझकर शरीयत में परिवर्तन किया है, हमारे देश के मुस्लिमों से किसी विषय में कम है? (नई दिल्ली १५ अक्टूवर, सं. २८)।

(१३) संविधान हमारा वास्तविक पवित्र पुस्तक है- मोदी ने कहा:, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने ८ जून २०१६ को यू. एस. सेनेट के समक्ष कहा- **"संविधान ही हमारा वास्तविक पवित्र ग्रंथ है जिसमे विश्वास की स्वाधीनता, मत व्यक्त करने की स्वाधीनता एवं सभी नागरिकों में समानता को मूलभूत अधिकार माना गया है।"**

जब Congressional Escort Committee के सदस्यों के द्वारा उन्होंने बधाई दी गई तो श्री मोदी ने यू. एस. कांग्रेस की संयुक्त सभा के प्रति अपना ऐतिहासिक संबोधन प्रारंभ किया। (pic.twitter.com/hmlE4Qx8Dt- Vikash Swarup MEA India).

एक प्रजातांत्रिक देश के प्रधानमंत्री का ऐसा resolve (व्याख्यान) प्रशंसा के योग्य है। परंतु वित्त, प्रतिरक्षा चरित्र, आध्यात्म एवं उन्नति के क्षेत्र में भारत की पवित्र भूमि की वर्त्तमान दशा पर पुनः विचार एवं अध्ययन की आवश्यकता है क्योंकि स्वतंत्रता के बाद ७० स्वर्णिम वर्ष की अवधि में क्या गलत हो गया जब हमें अपनी मातृभूमि के खंडित भूगोल, इतिहास एवं संस्कृति का सामना करना पड़ा जबकि हमारे सांस्कृतिक धरोहर के श्रेष्ठ आदर्शों एवं मूल्यों पर आधारित संविधान के प्रति अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों, इतिहासकारों, कानून निर्माताओं एवं वैज्ञानिकों द्वारा आज भी सम्मान व्यक्त किया जाता है।

एक वरिष्ठ यूरोपीय प्रोफेसर ने एकबार कहा था कि भारतीय संविधान की भूमिका को पढ़ने से जड़ विहीन (rootless) एवं हृदयविहीन प्रतीत होता है। इसमें इतिहास, अध्यात्म, परंपरा, पवित्रता एवं संस्कृति को कोई स्थान नहीं दिया गया है। विगत इतिहास के गर्व एवं पराक्रम की कोई चर्चा नहीं की गई है। वीरतापूर्वक किए गए स्वाधीनता आंदोलन

की भी इसमें कोई चर्चा नहीं की गई है। उनकी राय में संविधान की भूमिका का उद्देश्य देशवासियों को एक प्रेरणादायक श्रेष्ठ एवं स्थायी आदर्शवाद देना है। **भारत के संविधान की लिखी भूमिका में स्वआरोपित अधिकार विहीनता डिसएमपावरमेंट (Disempowerment) को कुछ अन्य देशों की भूमिकाओं से तुलना कर समझा जा सकता है।**

चीन के विपरीत **भारतीय संविधान की लिखित भूमिका में कृतज्ञता जैसे मानवीय मूल्यों का सर्वथा अभाव है।**

स्वाभाविक रूप से पश्चिमी प्रेस भारत की तुलना में चीन के संदर्भ को अधिक प्रधानता देता है। (Crucifixian of culture- by Prof. S. K. Chakraborty).

भारतीयवादी जर्मन लेखिका मारिया वर्थ ने अपने लेख में मंतव्य किया है कि जब ५९ प्रतिशत इसाई जनसंख्या के आधार पर जर्मनी को एक ईसाई राष्ट्र के रूप में घोषित किया गया है तो ८० प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या के आधार पर भारत को हिन्दू राष्ट्र क्यों नहीं घोषित किया जा सकता है? वास्तविक रूप से भारत को धर्म निरपेक्ष नहीं बल्कि धर्म सापेक्ष होना चाहिए।

राजनीति से प्रभावित भारतीय बुद्धिजीवियों की धर्मनिरपेक्षता (जो अधिकतर हिन्दु वामपंथी हैं) के माध्यम से भारतीय संविधान में दो धाराएँ (२९ एवं ३०) डाल दी गई हैं- अल्पसंख्यकों की सुरक्षा एवं अल्पसंख्यकों का अधिकार। **उपरोक्त धाराओं एवं धारा क्र. २५.२ बी को एक साथ पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि हिन्दू, सिख, जैन एवं बौद्धों की चर्चा की गई है परंतु इसाई एवं मुसलमानों का संदर्भ नहीं है।** इससे प्रतीत होता है कि मात्र यही दोनों समुदाय अल्पसंख्यक है एवं वे दोनों विजेता थे।

पारसियों को यह स्थान क्यों नहीं दिया गया है? क्या इसलिए नहीं दिया गया है कि वे विजेता नहीं बल्कि शरणार्थी थे एवं उन्होंने भारतीय संस्कृति को स्वीकार कर लिया था?

इन दो एकेश्वरवादी समुदाय ने भारत के वास्तविक बहुत्ववादी भारतीय समुदाय पर धर्म परिवर्त्तन, गणहत्या, मंदिर तोड़ने कलंकित करने तथा जजिया कर आरोपित करने जैसे अत्याचार किए थे।

राजनैतिक रूप से धर्मनिरपेक्षता वास्तव में भारत की मूल संस्कृति अर्थात् सनातन हिन्दुत्व को नपुंसक बनाने का एक उद्यम है।

अमेरिका में चीन के पूर्व राष्ट्रदूत शाह ने कहा था– भारत ने चीन को जीता एवं उस पर २० सदी तक आधिपत्य रखा परंतु उसके लिए एक भी सैनिक को सीमा के पार भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

यह बताना आवश्यक है कि सृष्टि, स्थिति एवं विनाश का पूर्ण ज्ञान रखने वाला ही इस विश्व की स्थिरता तथा मानवता के कल्याण के लिए नियम एवं कानून बना सकता है।

ब्रह्मा, शिव तथा स्वयंम्भू मनु द्वारा निर्मित हिन्दू दंड नीति की हिन्दु संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों में पूर्ण व्याप्ति है तथा यह जाति, धर्म से हटकर चारित्रिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करने वाला है। इन नीतियों को हजारों वर्षों तक प्राचीन भारत में कठोरता पूर्वं माना गया एवं ये साधारण अनित्य प्रशंसा की सीमारेखा से परे हैं। (Truth vol 84, 14-15).

(१४) भारत, विश्व का सबसे बड़ा अर्थ शास्त्र तंत्र-

National Council of Applied Economics Research के

पूर्व महानिदेशक एस. एल. राव लिखते हैं कि शशी थरूर की लिखी पुस्तक An era of darkness से ज्ञात होता है कि **अंग्रेजों द्वारा जीते एवं लूटे जाने से पूर्व भारत विश्वायन में अग्रणी था। Angus Maddison ने अपनी पुस्तक The world Economy में पूरी शताब्दी में विभिन्न देशों का अर्थनैतिक आधार पर मूल्यांकन किया था. जब भारत में अंग्रेज आए उस समय सभी अर्थनैतिक आधारों पर भारत सबसे धनी दो देशों में से एक था** (दूसरा देश चीन था)। विभिन्न धागों से बुने हुए सुंदर कपड़े, धातु से निर्मित पदार्थ, सुंदर तलवारें एक मजबूत जहाज इत्यादि भारत के प्रमुख उत्पादन थे. विश्वायन वास्तविक स्वस्थ प्रतियोगिता एवं उचित विनिमय पर आधारित था। (The Telegraph of Wednesday, 4th January 2017 TRUTH Vol. 84, No. 39, 41-42, 44-49).

अशोक कपूर ने "An era of Darkness" नामक पुस्तक पर मंतव्य करते हुए लिखा है कि लेखक ने भारत में गाँवों में फैली गरीबी तथा व्यापार एवं वाणिज्य के नष्ट होने के लिए अंग्रेजों को उत्तरदायी माना है। जिसके लिए उन्होंने नौकरशाही के द्वारा किए गए अत्याचारों के माध्यम से जानबूझकर भारत के हितों की चरम अवहेलना की। उन्होंने लॉर्ड मेकाले को ऐसे कानून बनाने के लिए उत्तरदायी माना है जो भारत के अन्य कानूनों से संबंधित नहीं थे। उन्होंने अंग्रेजों से भारत पर कथित गलत ढंग से शासन करने के लिए क्षतिपूर्त्ति की मांग भी की है। (Imperial India - I, The Statesman, Kolkata, Wednesday 8 February, 2017).

इस विषय को ट्रूथ में धारावाहिक रूप से निम्नलिखित शीर्ष के

अधीन मुद्रित किया गया है– "Restore Truth and Hindu Glory" OECD France (Organisation for Economic Cooperation and Development Paris The world Economy pp 263-4) के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार–

प्रथम शताब्दी एवं १०८० ई० में विश्व GDP में भारत का अंश क्रमशः ३२.९ प्रतिशत एवं २८.९ प्रतिशत था एवं विश्व में इसका प्रथम स्थान था। १५०० ई० में विश्व GDP में भारत का अंश २४.५ प्रतिशत था एवं भारत का स्थान द्वितीय था जो चीन के बाद था एवं चीन का अंश २५ प्रतिशत था। १७०० ई० में भारत का अंश २४.४ प्रतिशत था एवं विश्व में इसका प्रथम स्थान था.

१७वीं शताब्दी इंग्लैंड की धनराशि भारतीय धनराशि का १ प्रतिशत था।

१७ शताब्दियों तक (अर्थात ० ई. से १७०० ई. तक) भारत विश्व GDP के सबसे बड़े अंश का धारक था। इस अवधि में भारत ने दूसरे देशों पर कभी आक्रमण कर उनका धन लूटकर उन्हें गुलाम नहीं बनाया। इसके विपरीत १००० ई. से भारत विदेशी आक्रमणों, अर्थनैतिक शोषण एवं सांस्कृतिक विनाश के केंद्र में रहा। ब्रिटिशों द्वारा १७५७ ई० में भारत को पुनः जीता गया एवं उसके बाद से उपरोक्त प्रक्रियाएँ हर दिशा में जारी रही।

जब तक भारतवर्ष अपनी प्रक्रियाओं, सिद्धांतों, एवं मानकों पर चलता रहा तबतक इसका प्रदर्शन अत्यंत उत्तम रहा एवं आर्थिक रूप से भी यह सबसे अग्रणी रहा। परंतु अपने सत्यापित इतिहास एवं अपनी नींव से हटकर जबसे इस देश ने अपने संविधान के अनुसार चलना

प्रारंभ किया तब से यह अपनी चारित्रिक विशेषता एवं ऊर्जा को खो बैठा है। इस कारणवश इसका स्तर लगातार गिर रहा है एवं इसका आकार भी छोटा हो रहा है। (Crucifixion of culture by Prof. S. K. Chakraborty).

यदि "Make in India" प्रक्रिया के साथ इसकी अर्थव्यवस्था को पुनः व्यवस्थित करने के लिए पर्याप्त रूप से संशोधित कदम उठाए गए होते तो भारत की उन्नत्ति वर्त्तमान दर से वार्षिक तीन गुना अधिक होती।

(१५) पानी की कमी, कारण एवं निवारणः

केंद्र ने सर्वोच्च न्यायालय को बताया कि लगभग ३३ करोड़ लोग (जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग एक चौथाई है) भीषण सूखे एवं पेय जल संकट तथा कृषि में संकट का सामना कर रहे हैं। महाराष्ट्र के सूखा ग्रस्त जिलों शोलापुर, पुणे, अहमदनगर, सांगली, सतारा, उस्मानाबाद, बीड, लातुर, नासिक, जालना, परमजी एवं औरंगाबाद में राज्य का ७९.५ प्रतिशत गन्ना उगता है. चीनी अर्थात् गन्ने की खेती में पानी की अत्यधिक आवश्यकता होती है। सरकार को अविलंब गन्ना सहकारिताओं एवं कारखानों को केंद्रीभूत सूखाग्रस्त क्षेत्र से हटाकर अन्य जगहों पर स्थापित करना चाहिए।

गोरक्षा एवं समन्वित गोचारा विकाश देशी बैलों के द्वारा मवेशी के प्रजनन, गाय के गोबर के प्रयोग में वृद्धि कर जमीन के जलधारण क्षमता को बढ़ाने एवं देश में गो हत्या पर प्रतिबंध लगाकर देश की कृषि, जमीन की उर्वराशक्ति को उन्नत किया जा सकता है एवं प्रदूषण पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। (TNN 26 अप्रैल 2016, TRUTH vol 84 सं. ६)

(१६) काल, कर्म एवं जन्मगत असाधारण मेधा का उदाहरण (Prodigy Paradigm):

अनन्या वर्मा जिसकी उमर ५ वर्ष ८ महीने है अपने आयुवर्ग से संबंधित पढ़ाई की पुस्तकों को पसंद नहीं करती है। A for Apple, B for Bat या कविता की पुस्तकें उसे आकर्षित नहीं करती है। उसके बदले वह मुंशी प्रेमचंद्र की कहाँनियाँ, नवीं एवं दसवीं कक्षा के हिन्दी साहित्य की पुस्तकें एवं हनुमान चालीसा पढ़ना अधिक पसंद करती है. वह बिना किसी रुकावट के हिन्दी समाचार पत्र पढ़ सकती है। उसके पिता कहते हैं कि १ वर्ष ९ महीने की छोटी उम्र में, जब कोई बच्चा मुश्किल से बोल पाता है, अनन्या ने पूरा रामायण पढ़ लिया था।

(अन्वेशा बंद्योपाध्याय, एई समय, २४ अगस्त, २०१६ The Astonishing Prodigy- three brothers and sisters.)

परंतु ऐसे अद्भुत एवं विलक्षण बच्चे इस विद्यालय के लिए नए नहीं है। २००७ ई० में ७ वर्षीय सुषमा वर्मा इस विद्यालय से १०वीं की परीक्षा में उत्तीर्ण हुई थी। अपनी मेधा पर चलते हुए उसने मात्र पंद्रह वर्ष की आयु में पी. एच. डी के लिए अपना नामांकन करवाया।

Medieval (मध्ययुग में) जर्मनी में हेनरिक हेन से लेकर वर्त्तमान में ७ वर्षीय चिकित्सक आकृत जैसवाल तक ऐसे कई child Prodigy (शिशु प्रतिभा) के उदाहरण हैं परंतु वे सभी अपने परिवार में अपवाद के रूप में है। परंतु लखनउ का वर्मा परिवार के तीनों भाई एवं बहन- सभी में विलक्षणता भरी हुई थी।

इन घटनाओं के उत्तर खोजने के लिए specific brain site development (मस्तिष्क के विशिष्ट कोष का विकाश), epigenetic

analysis, Quantitative gene in heritance, methylation of DNA technique इत्यादि का अध्ययन करने से एवं इन घटनाओं के वास्तविक कारणों को जानने का प्रयास नहीं करने पर उनके आंशिक कारण ही ज्ञात होते हैं। मात्र नित्य निर्दोष शास्त्रों से ही इनके कारण का पता चलता है।

इसलिए हमारे परम आदरणीय प्रतिष्ठाता श्रीमद उपेन्द्रमोहन जी ने कहा था– ज्यों ज्यों विज्ञान की प्रगति होती है त्यों त्यों यह अपने भ्रम से दूर होकर हिन्दुत्व के अपरिवर्त्तनीय एवं शाश्वत सत्य की ओर चल पड़ता है।

यह वर्णाश्रम धर्म एवं भक्ति धर्म पालन का संयुक्त प्रभाव है जिसने आनुवंशिक प्रजनन में उन्नत वैज्ञानिक स्पन्दन (छन्द-ताल, लय) प्रदान किया है एवं सनातन भारत में शुद्ध संस्कार के रूप में निश्छल आध्यात्मिक भार तरंगो (tranquil metaphysical devotional vibrations) को इस प्रकार भर दिया है कि पवित्र वंश विस्तार हो एवं हिन्दू समाज में इन विलक्षण बच्चों का सही रूप से लालन पालन हो।

जाति व्यवस्था के विषय में हमें यह याद रखना चाहिए कि जातियों में भिन्नता झगड़े का कारण नहीं है बल्कि यह एकता का कारण है। कोई अपने साथ किसप्रकार एकत्रित होगा। कोई भी वस्तु अपने साथ नहीं बल्कि किसी अन्य वस्तु के साथ ही एकत्रित हो सकती है।

एक हिन्दू जानता है कि बाह्य रूप से समानता अपराध है एवं ठीक उसी प्रकार आंतरिक भिन्नता का भाव भी अपराध है। आंतरिक समानता के साथ बाह्य भिन्नता ही समाज का आधार होना चाहिए।

जड़ भारत के दिव्य क्रियाकलापों की आलोचना करते हुए श्री व्यासदेव, श्री शुकदेव, आदि शंकर, संत ज्ञानेश्वर आदि ने यह बताया है कि किसप्रकार काल, कर्म, संस्कार एवं भगवत् अर्चना के सम्मिलित प्रभाव से ही जन्म एवं जीवन की दिशा निर्धारित होती है। (TRUTH, vol 84, No. 24)

श्रीमत् उपेन्द्रमोहन के प्रण को पूर्ण करने के लिए सतत् समर्पित एवं **परम करूणामय श्रीहरि की इच्छा के अनुरूप चलने की नीरव प्रार्थना करते हुए** 'Truth' भारत एवं विश्वपटल पर हो रहे द्रुत परिवर्त्तनों का साक्षी है जो धीरे धीरे परंतु निश्चित रूप से मिथ्या अहंकार एवं आत्मविश्वास की प्रबलता को दूर कर सत्य को इसकी पूर्ण उज्ज्वलता एवं श्रेष्ठता के साथ प्रतिष्ठित करने की ओर बढ़ रहा है।

जयन्ति शास्त्राणि द्रवन्ति दाम्भिकाः।
हृष्यन्ति संतो निपतन्ति नास्तिकाः॥

शास्त्रधर्म प्रचार सभा ९१ चौरंगी कलकता से निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हैं जो उपलब्ध हैं।
डाक से मंगाने पर महसूल आगे भेजना चाहिये।

हिन्दी

१. शास्त्र धर्म प्रचार सभा एक विज्ञप्ति
२. जयन्ति शास्त्राणि
३. सनातन दृष्टि में भारत का संविधान
जब जर्मनी ईसाई है, तो क्या भारत हिन्दू है?
४. यतो धर्मस्ततो जयः
५. हिन्दू धर्म ही एकमात्र धर्म क्यों?
६. सत्य संवाद
७. हमारे प्रतिष्ठाता (यंत्रस्थ)
८. शिक्षा और धर्म
९. भारत के यथार्थ इतिहास का लिखना अति आवश्यक एवं आर्यों का भारत आक्रमण एक सरासर झूठ
१०. सत्यावलोकन

बंगला

१. हिन्दूधर्म व परिषिष्ट
२. दिव्यशिशु श्रीश्री गोपालकृष्ण
३. आमादेर प्रतिष्ठाता
४. सत्यपुरुष श्रीमत् श्री उपेन्द्रमोहन
५. स्तुति पारिजातः
६. धर्मरत्न डा. नलिनीरंजन सेनगुप्त
७. हिन्दू धर्मई एकमात्र धर्म केनो एवं शास्त्रार्थ

ENGLISH

1. Reason Science & Shastras
2. Our Founder
3. Education in India: A wake up call
4. Secular India- Why and How? - A study in retrospect.
5. Why Hindu code is detestable
6. Adhyatma Ramayanam
7. A calamity colossal
8. Shrimat Shri Upendramohan
9. Education in India: A Tree without roots
10. In God's Garden and many other Books.

PERIODICALS

TRUTH (weekly) Rs. 100/- yearly

भारताजिर बंगला (साप्ताहिक) वार्षिक ८० रू